ISSN 2277-5897 SABLOG
PEER REVIEWED JOURNAL

लोक चेतना का राष्ट्रीय मासिक

135

सबलोग

जनवरी 2025 • ₹ 50

नया साल और नये सवाल

- दक्षिण कोरिया की वह रात
- इतिहास और अतीत का तनाव
- शहरी खेती में जैव विविधता

अलविदा
जावेद अनीस

सबलोग के शुरूआती दिनों से ही वे 'सबलोग' के साथी रहे। मध्यप्रदेश की राजनीति और समसामयिक राष्ट्रीय मुद्दों पर 'सबलोग' में उन्होंने नियमित लिखा। छात्र-जीवन से ही जनपक्षीय सरोकार और प्रगतिशील चेतना के लिए वे प्रतिबद्ध रहे। इसी प्रतिबद्धता के कारण एक सामाजिक कार्यकर्ता और प्रखर पत्रकार के रूप में उनकी प्रतिष्ठा सर्वविदित है।

निडरता उनकी पत्रकारिता की पहचान थी तो प्रेम उनकी अभिव्यक्ति की आवाज था। निजी जिन्दगी में भी उन्होंने खुलकर प्रेम किया और उसी प्रेम को अपना जीवन बना लिया। उनका जन्म एक मुस्लिम परिवार में हुआ था, लेकिन सभी धर्मों के प्रति उनके मन में गहरा सम्मान था। इसलिए जिस शिद्दत से वे ईद मनाते थे उसी शिद्दत से अपनी हिन्दू पत्नी के साथ हर दीवाली में अमन का दीया जलाकर अँधेरा दूर करने की कोशिश में लगे रहते थे।

प्रेम से लबालब व्यक्ति घृणा कर ही नहीं सकता, जाहिर है वे पूरी दुनिया में प्रेम को खिलते देखना चाहते थे। वे अमन और साम्प्रदायिक सद्भाव की दुनिया के हिमायती थे। उनका विरोध धर्म के पाखण्ड और हिंसक कट्टरता से था। देश और दुनिया में बढ़ती साम्प्रदायिकता और धार्मिक कट्टरता उन्हें निराश कर रही थी। इतना निराश कि उन्होंने स्वयं को ही समाप्त करने का फैसला ले लिया। उनके इस फैसले से हम असहमत, स्तब्ध और अत्यन्त दुखी हैं।

यह एक अजीब विडम्बना है कि सच, न्याय और मानवाधिकार के लिए लड़ने वाले भोपाल के प्रसिद्ध पत्रकार जावेद अनीस ने अपनी आत्महत्या के लिए मानवाधिकार दिवस (10 दिसम्बर) को ही चुना। उनका यह निष्ठुर अवसान हमारे समय की भयावहता का मात्र प्रतीक बनकर रह जाएगा या घृणा, धार्मिक कट्टरता और उन्माद की जगह सामाजिक सद्भाव की स्थापना का नया प्रस्थान बिन्दु होगा?

समय की क्रूरता से वे और लड़ नहीं पाये, इसका हमें अफसोस है। लेकिन हिन्दी पत्रकारिता और सामाजिक कार्य के क्षेत्र में उनका जो योगदान है, उसके लिए हम उनको सलाम करते हैं और सबलोग परिवार की तरफ से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

सबलोग-135

वर्ष 16, अंक 1, जनवरी 2025

ISSN 2277-5897 SABLOG
PEER REVIEWED JOURNAL
www.sablog.in

सम्पादक
किशन कालजयी

संयुक्त सम्पादक
प्रकाश देवकुलिश
राजन अग्रवाल

उप-सम्पादक
गुलशन चौधरी

ब्यूरो
उत्तर प्रदेश : शिवाशंकर पाण्डेय
बिहार : कुमार कृष्णन
झारखण्ड : विवेक आर्यन

समीक्षा समिति (Peer Review Committee)
आनन्द कुमार
रत्नेश्वर मिश्र
मणीन्द्र नाथ ठाकुर
मंजु रानी सिंह
सफदर इमाम कादरी
प्रमोद मीणा
राजेन्द्र रवि
मधुरेश
महादेव टोप्पो
विजय कुमार
आशा
सन्तोष कुमार शुक्ल
अखलाक 'आहन'
अभय सागर मिंज

सम्पादकीय सम्पर्क
बी-3/44, तीसरा तल, सेक्टर-16,
रोहिणी, दिल्ली-110089
+ 918340436365
sablogmonthly@gmail.com

सदस्यता शुल्क
एक अंक : 50 रुपये–वार्षिक : 600 रुपये
डाक खर्च सहित 1100 रुपये

सबलोग
खाता संख्या-49480200000045
बैंक ऑफ बड़ौदा,
शाखा-बादली, दिल्ली
IFSC-BARB0TRDBAD
(Fifth Character is Zero)

स्वामी, सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक किशन कालजयी द्वारा बी-3/44, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-110089 से प्रकाशित और लक्ष्मी प्रिण्टर्स, 556 जी.टी. रोड शाहदरा दिल्ली-110032 से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं, उनसे सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

पत्रिका अव्यावसायिक और सभी पद अवैतनिक।

पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए न्यायक्षेत्र दिल्ली।

संवेद फाउण्डेशन का मासिक प्रकाशन

नया साल और नये सवाल

उम्मीदों की बाट जोहता नया साल : **सेवाराम त्रिपाठी** 4

नया दौर : नयी चुनौतियाँ : **अजय तिवारी** 6

मानवीय सभ्यता का करुण पक्ष : **ज्योतिष जोशी** 8

पूँजीवाद की उच्चतर अवस्था है क्रॉनी कैपिटलिज्म : **अनिल राय** 10

सर उठाते सवाल : **मृत्युंजय श्रीवास्तव** 13

आज की बदलती दुनिया : **विजय कुमार** 15

अर्थव्यवस्था और तकनीकी विकास की गलत राह : **मृत्युंजय प्रभाकर** 18

हिंसा और असमानता में घिरी अस्मिता : **शान कश्यप** 21

सृजनलोक

छह कविताएँ : **शालू शुक्ला,** टिप्पणी : **ज्योतिष जोशी,** रेखांकन : **प्रीतिमा वत्स** 24

विशेष लेख

हमारा संविधानः लोकतान्त्रिक राष्ट्र-निर्माण की आधारशिला : **आनन्द कुमार** 26

राज्य

महाराष्ट्र / कागभगोड़ा खा गया खेत : **श्रीकान्त आप्टे** 30

उत्तर प्रदेश / विपक्ष में फिर हुआ सुराख : **शिवाशंकर पाण्डेय** 33

झारखण्ड / आर्थिक चुनौतियों की कसौटी पर हेमन्त : **विवेक आर्यन** 35

मणिपुर / सांस्कृतिक विभाजन की निरर्थक अवधारणा : **जमुना सुखाम** 37

स्तम्भ

चतुर्दिक / कुछ आशंकाएँ, कुछ सम्भावनाएँ : **रविभूषण** 39

तीसरी घण्टी / कारवाँ-ए-हबीब में शामिल होने का मतलब : **राजेश कुमार** 42

यत्र-तत्र / प्रतिबद्धता का क्षरण : **जय प्रकाश** 45

देशान्तर / दक्षिण कोरिया की वह रात : **धीरंजन मालवे** 48

परती परिकथा / इतिहास और अतीत का तनाव : **हितेन्द्र पटेल** 51

कविताघर / बदनसीब तारीख और कविता : **प्रियदर्शन** 54

विविध

शहरनामा / शहरी खेती में जैव-विविधता : **राधेश्याम मंगोलपुरी** 56

प्रासंगिक / भोपाल गैस त्रासदी के चार दशक : **शैलेन्द्र चौहान** 59

शोध लेख / उपन्यास में मिथक के प्रयोग : **नूतन कुमार झा** 61

सिनेमा / स्त्री किसी की दासी नहीं : **रक्षा गीता** 63

लिये लुकाठी हाथ / ऑपरेशन अँग्रेजी : **नूपुर अशोक** 66

रंगसाज / रंग एक दरवाजा है... : **देव प्रकाश चौधरी** 67

आवरण : **शशिकान्त सिंह**

अगला अंक : स्वास्थ्य सेवा में व्यापार और नैतिकता

आवरण कथा

उम्मीदों की बाट जोहता नया साल

सेवाराम त्रिपाठी

नया साल एकदम नया नहीं होता। वह अनन्त सालों के ऊपर सवार होकर यहाँ तक आन पहुँचता है। यह क्रम जारी रहेगा और इस साल को भी हमें बहुत सीमित सन्दर्भों में नहीं देखना चाहिए। उसके आगे भी बहुत कुछ है और पीछे भी। बौनी दृष्टि हमें एकदम संकीर्ण बना देती है। फिर इस साल के ऊपर गुत्थम-गुत्था हो रहे हैं न जाने कितने सवाल और उन्हीं में लिपटे हैं न जाने कितने बवाल। जो हमारे एकदम आस-पास हैं लेकिन वही हमसे बहुत-बहुत दूर हैं।

लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं।
+919425185272
sevaramtripathi@gmail.com

हम यूँ तो नये साल में आ गये हैं, असफलताओं का धूल-कचरा ओढ़े। विडम्बनाएँ और जीवन के अन्तर्विरोध कई प्रकार के जलवे निर्लज्जतापूर्वक दिखा रहे हैं। भारतीय समाज और सांस्कृतिक मूल्य एक विशेष प्रकार की 'कण्डीशनिंग' में आ चुके हैं। धीरे-धीरे पक्ष, प्रतिरोध और प्रतिपक्ष को निगलने की कोशिश कर रहा है। कार्यकर्ता, लेखक-कलाकार और जागरूक पत्रकार लगातार पराजय की परिधि में लगभग आ गये हैं। फिर भी जिजीविषा हमें संघर्षशील बना रही है और नित नयी ऊर्जा देती है। यूँ तो समाज के जुझारूपन को ठिकाने लगाये जाने के इरादे साफ दिख रहे हैं। जोड़ने की शक्तियों को कमजोर करने के उद्यम जारी हैं और नफरत की खेती का क्षेत्र निरन्तर बढ़ रहा है। स्वतन्त्रता, जनतन्त्र और नागरिकता को किसी 'पेण्डिंग' मसलों और सूरतों में तब्दील किया जा रहा है। हर चीज बाजार के मनोविज्ञान के साथ सर्वसत्तावाद के हाथों में है। उनके पास स्वायत्तता अब दिखाने भर के लिए नहीं बची। हाय-हाय और हाय तौबा के बीच विकास प्रक्रिया की इबारतें गढ़ी जा रही हैं और हर ओर उत्सवों की धूम है।

भय और निर्लज्जताएँ हमारे जीवन के स्थायी भाव हो चुके हैं। लम्पटपना, झूठ और अपराध गौरव की कोटि में विकसित हो रहे हैं। लेकिन घुप्प अँधेरे के खिलाफ आशा और विश्वास का दिया निरन्तर जल रहा है तथा जीवन के द्वन्द्वों और गतिशीलता को नये आधार और आयाम दे रहा है। प्रतिरोध और प्रतिपक्ष को चुटकुलों की परियोजनाओं में बदला जा रहा है। जो पक्षधर नहीं है वह देशतोड़क है। समय परिवर्तन तो एक प्रक्रिया है, कोई यूँ नहीं आता। आता है तो कई सवाल एक साथ लेकर आता है। कुछ भी ठहरता नहीं न समय, न समाज, न यह प्रकृति और न ही यह संस्कृति। ज्यादातर की यात्राएँ ऊर्ध्वमुखी होती हैं। अब तो कुछ की अधोमुखी भी होने लगी हैं। कालेपन की छतरियाँ तन रही हैं। वह इसलिए कि उनसे सामाजिक विकास की कड़ियाँ टूट गयी हैं और वे अपने को चमकाने के लिए विज्ञापन और झण्डे फहराने को लालायित हैं। वस्तु और विचार गतिशील भी हैं और परिवर्तनशील भी। सम्भावनाओं से भरी है यह दुनिया। हम कितनी आशाओं और विश्वासों में हैं। हम कितने प्रतिरोधों के बीच यथार्थ में भी हैं, स्वप्न और स्मृति में भी। हम घुप्प अँधेरे के बरक्स प्रकाश को जिन्दा रखना चाहते हैं। हम अपने इरादों को कमान की शक्ल देने में जुटे हैं। वे बनी-बनायी चीजों को विकास के नक्षत्र की आवश्यकता महसूस करते हैं और उसके समग्र विकल्पों को प्राप्त करने की खोज में लगे हैं। जबकि जीवन के अनेक संघर्ष हमें सम्भावनाओं के आकाश मण्डल तक ले जाने के लिए वचनबद्ध हैं।

हमारा संसार, जीवन और समय बहुत तेजी से बदल रहा है। वह मानवीय संवेदनाओं, मूल्यों, नैतिकताओं विचारधाराओं की छाती